प्रा.डॉ. राजेंद्र शहा
एम्.ए., एम्.फिल., पीएच्.डी.
प्राध्यापक, हिंदी विभाग,
मुधोजी महाविद्यालय,
फलटण, जि.सातारा (महाराष्ट्र)

*** प्रमाणपत्र ***

मैं प्रा.डॉ. राजेंद्र मोतीचंद शहा, प्राध्यापक, हिंदी विभाग, मुधोजी महाविद्यालय, फलटण, यह प्रमाणित करता हूँ कि, **श्री. राऊत राजू जनार्धन** ने शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की एम्.फिल्.(हिंदी) उपाधि के लिए प्रस्तुत लघु शोध–प्रबंध **"खंडकाव्य के परिप्रेक्ष्य में 'भस्मांकुर' का अनुशीलन"** मेरे निर्देशन में बडे परिश्रम के साथ सफलतापूर्वक पूरा किया है । यह परीक्षार्थी की मौलिक कृति है ।

मैं संस्तुति करता हूँ कि इसे परीक्षा हेतु अग्रेषित किया जाए ।

शिवाजी विश्वविद्यालय (हिन्दी विभाग) कोल्हापुर

निर्देशक,

(प्रा.डॉ. राजेंद्र मोतीचंद शहा)

सातारा
दि. 25-5-1996

हम संस्तुति करते हैं कि प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबन्ध परीक्षणार्थ अग्रेषित किया जाए।

Dr. G. S. SURVE
M. A. Ph. D.
Head, Hindi Department,
Lal Bahadur Shastri College,
SATARA – 415 002.

SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR.

3·3·98

Principal,
Lal Bahadur Shastri College,
SATARA.

xxx प्र ख्या प न xxx

खंडकाव्य के परिप्रेक्ष्य में "भस्मांकुर" का अनुशीलन ।

यह लघुशोध–प्रबंध मेरी मौलिक रचना है, जो एम्.फिल् (हिंदी) के लघु प्रबंध के रुप में प्रस्तुत की जा रही हैं । यह रचना इससे पहले शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर या अन्य किसी उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गई है ।

फलटण –

राजू जनार्धन राऊत

SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR
DR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR

*** भूमिका ***

"भस्मांकुर" आधुनिक युग के महान काव्यों में अपनी अलग विशेषता के कारण अमर है । प्रस्तुत ग्रंथ "भस्मांकुर" का कवि हिंदी काव्य जगत में सुपरिचित है । उन्होंने "भस्मांकुर" के द्वारा समाज, राष्ट्र, विश्व का नव-निर्माण करने का प्रयास किया है ।

नागार्जुनजी एक जनकवि हैं । उसका संपूर्ण साहित्य जनजीवन के चित्रण से भरा हुआ है । उन्होंने समस्त मानव जाति के सामने अपने मौलिक विचार रखकर जन जागृति करने का प्रयास किया है । जनता को सुखी एवं समृध्द बनाने के लिए नागार्जुनजी बचपन से लेकर आज तक संघर्ष कर रहे है । इन के इसी रुप के मैं प्रभावित होकर 'भस्मांकुर' की ओर आकर्षित हुआ । जब एम.फिल के लघुशोध – प्रबंध के लिए विषयचयन करने के लिए मैंने सोचना शुरु किया तो नागार्जुन की "भस्मांकुर" रचना ने मेरा ध्यान बार-बार आकर्षित किया । मेरी रुचि मैंने मेरे शोध-निर्देशक, गुरुवर्य तथा जीवन पथप्रदर्शक डॉ.राजेंद्र शहा सरजी से कही तो उन्होंने मुझे प्रेरित तथा उत्साहित किया ।

प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध छः अध्यायों में विभक्त है । प्रथम अध्याय में कवि नागार्जुनजी के व्यक्तित्व और कृतित्व का अध्ययन किया जायेगा । किसी भी साहित्यिक कृति का अध्ययन करने से पहले उसके रचेयिता की जीवनी देखनी पडती है क्योंकि उनके जीवन का प्रभाव उनकी कृति पर होता है । कवि नागार्जुनजी के व्यक्तित्व पर सामाजिक, राजनीतिक एवं पारिवारिक वातावरण का इतना गहरा प्रभाव पडा है कि उनका व्यक्तित्व कुंदन की भाँति चमक उठा है । इन्हीं व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति उनके संपूर्ण काव्य में हुई है । यहीं चित्रण हम प्रथम अध्याय में देखेंगे ।

द्वितीय अध्याय में खंडकाव्य का स्वरुप स्पष्ट किया जायेगा । स्वरुप के साथ खंडकाव्य का सैध्दांतिक विवेचन भी होगा । काव्य के विविध रुपों के साथ खंडकाव्य का भी स्थान निर्धारित किया जायेगा । खंडकाव्य संबंधी विविध काव्यशास्त्रियों की मान्यताओं पर प्रकाश डाला जायेगा ।

SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR
BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR

अन्य समान काव्य रुपों से खंडकाव्य की तुलना करने का प्रयास भी किया जायेगा ।

तृतीय अध्याय में 'भस्मांकुर' की कथावस्तु और चरित्रांकन का अध्ययन किया जायेगा । "काग-दहन" के पौराणिक प्रसंग को कामदेव, रति, वसंत, शिव और पार्वती आदि चरित्रों के द्वारा प्रस्तुत किया जायेगा । 'भस्मांकुर' के पात्र पौराणिक होकर भी उन्हें कवि ने आधुनिक रुप में चित्रित किया है । नागार्जुनजी ने अपने जनकल्याणकारी विचारों को इन पात्रों के माध्यम से स्पष्ट किया है ।

भावपक्ष और कलापक्ष के आधार पर काव्यगत सौंदर्य का मूल्यांकन किया जाता है । यही प्रयास मैं चतुर्थ अध्याय में करुँगा । "भस्मांकुर" के शिल्पविधान में भाषा शैली, अलंकार, छंद, रस आदि पर विशेष चर्चा की जायेगी । इन अंगों की उत्पत्ति, विकास, परिभाषा एवं भेद की चर्चा करते हुए इन अंगों की योजना नागार्जुनजी ने 'भस्मांकुर' में कहाँ तक की है, यहीं विवेचन चतुर्थ अध्याय में करेंगे ।

नागार्जुनजी के प्रगतिशील विचारों का विश्लेषण पाँचवे अध्याय में किया जायेगा । नागार्जुनजी मानवतावादी कवि है । उनके साहित्य का लक्ष्य है – मानव । संसार में चिर शांति प्रथापिक करने के लिए उन्होंने सबसे पहले मानव का सर्वांगिण विकास करने का प्रयास किया है ।

नागार्जुनजी स्वभावता विद्रोही कवि है । जो लोग जनता को चूसने का काम करते हैं उनके खिलाफ आवाज उठाकर उनपर व्यंग्य का प्रहार करते हैं । सचमुच नागार्जुनजी के समग्र काव्य रचनाओं में युग का प्रतिबिंब है ।

नागार्जुनजी युग का नव-निर्माण करना चाहते हैं । उन्होंने 'भस्मांकुर' काव्य के माध्यम से आज की समस्याओं का दर्शन करवाया है । रुढियाँ, अंधविश्वासों, पाखंड, अन्याय, अत्याचार, शोषण, नारी और विज्ञान आदि समस्याओं को 'भस्मांकुर' खंडकाव्य के माध्यम से कैसे चित्रित किया है उसे देखेंगे ।

जीव सृष्टि को जीवित रखने के लिए नागार्जुनजी ने "काम" को विशेष महत्त्व दिया है ।

SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR

'भस्मांकुर' काव्य मानवता का संदेश देनेवाला काव्य है । जिसमें कवि ने मानवता के हेतु अपना सर्वस्व न्योछावर कर देने का आग्रह किया है ।

षष्ठ अध्याय : उपसंहार में प्रथम अध्याय से लेकर पाँचवे अध्याय तक किए गये विवेचन की समग्र चर्चा की जायेगी ।

इस प्रकार नागार्जुनजी ने अपनी इस महान कृति द्वारा जन जागृति करके विश्व का नवनिर्माण करने का प्रयास किया है । इन्हीं प्रगतिशील, विश्वकल्याणकारी विचारों से मैं प्रेरित होकर 'भस्मांकुर' की ओर आकर्षित हुआ ।

कवि नागार्जुनजी के 'भस्मांकुर' का अध्ययन करते समय मुझे अपने परमपूज्य गुरुवर्य प्रा.डॉ. राजेंद्र शहा सरजी ने अपने कार्यभार से वक्त निकालकर आंतरिक प्रोत्साहन तथा मौलिक सूचनाएँ दी । उनका निर्देशन पाकर ही यह लघुशोध-प्रबंध कार्य मैं पूरा कर सका हूँ । यदि उनकी सतत प्रेरणा न होती तो मेरा शोधकार्य अधूरा ही रहता । मैं उनके प्रति अत्याधिक कृतज्ञ हूँ । इस ग्रंथ में जो त्रुटियाँ होगी वह मेरी अल्पज्ञान की सीमा होगी ।

एल.बी.एस. कॉलेज, सातारा के हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ.सुर्वेजी और शिवाजी कॉलेज, सातारा के डॉ. निकमजी ने इस शोधकार्य में बडी सहाय्यता प्रदान की, अतः मैं उनका ऋणी हूँ । इस शोध कार्य में मुधोजी कॉलेज फलटण के प्राचार्य मा.देशमुख सरजी तथा मुधोजी कॉलेज के हिंदी विभागाध्यक्ष प्रा. श्रीवास्तवजी, प्रा.रणवरेजी, प्रा.शेखजी का विशेष योगदान रहा है । मैं इनके प्रति आभार व्यक्त करता हूँ ।

मुधोजी कॉलेज, फलटण के ग्रंथपाल श्री.जी.जी. पवारजी तथा श्री. उदय पवारजी का भी विषेश आभारी हूँ जिन्होंने मुझे विषयोचित सामग्री उपलब्ध करवायी । साथ ही एल.बी.एस्. कॉलेज सातारा के प्राचार्य श्री. पुरुषोत्तम शेठ तथा ग्रंथपाल और सेवकों का और पुना के श्रीगणेश बुक सेंटर का भी विशेष आभारी हूँ ।

...AK LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR

मैं उन समस्त विद्वानों, विचारकों के प्रति भी आभार व्यक्त करता हूँ जिनकी पुस्तकों का एवं विचारों का समावेश किया गया है ।

मैं श्री. धनंजय कान्हेरे तथा सौ. प्रतिम महाजनी का आभारी हूँ जिन्होंने अल्पावधि में लघुशोध–प्रबंध का सुंदर टंकन तथा अन्य कार्य निर्धारित समय पर पूरा किया है ।

आपका क्षमाप्रार्थी,

(श्री. राऊत आर.जे.)